BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

पर्यावरण: हर कदम सजीव संरक्षण की ओर

***अंजली शर्मा,**

पुस्तकालय विभाग,

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

सारांश

आज पूरा विश्व यदि किसी समस्या को लेकर चिंतित है, तो वह है पर्यावरण की समस्या, विकास की अंधी दौड़ में हम इतने व्यस्त हो गए कि हमें पता ही नहीं चला कि हम अपना विकास कर रहे हैं या विनाश और जब हमें एहसास हुआ तो बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि अब प्रकृति और मनुष्य के बीच का सारा संतुलन बिगड़ चुका है। संसाधनों की इतनी लूटमार हुई की दिवाला नजर आने लगा।

हमें अपनी गलती का एहसास हुआ हम चिंतित हुए लेकिन कोरी चिंता से क्या होता है। कुछ ऐसा करके दिखाना पड़ेगा जिससे पता चले कि हम होश में हैं और ज्यादा बर्बाद होने को तैयार नहीं है। जिस दिन ऐसा होने लगेगा प्रकृति भी मनुष्य पशु पक्षी वनस्पति पर फिर से मेहरबान हो जाएगी इस तथ्य पर विचार करते हुए प्रतिवर्ष भारत में 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाया जाता है जिससे लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जा सके।

मुख्य शब्द: पर्यावरण, पारिस्थितिकी तंत्र, संरक्षण प्रदूषण, प्रकृति संसाधन, पर्यावरण शिक्षा।

प्रस्तावना

हम जिस परिस्थितिकी तंत्र में रहते हैं वह एक ऐसी आपस में जुड़ी हुई प्राणियों का जाल है जो पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाती है जिसे हम सभी पर्यावरण कहते हैं जो हमें जीवित रहने के लिए स्वच्छ हवा उपजाऊ मिट्टी स्वच्छ जल तथा जैव विविधता से भरा हुआ एक उचित वातावरण प्रदान करती है प्राचीन काल से ही मानव समृद्धि की दिशा में प्रकृति ने अपना योगदान दिया है पर्यावरण को परिभाषित करते हुए

मैकाइवर कहते हैं, "वह पृष्ठ तथा उसकी समस्त प्राकृतिक शक्तियां दशाएं जो पृथ्वी पर विद्यमान होकर मानव जीवन को प्रभावित करती हैं पर्यावरण के अंतर्गत आती हैं।"

डी.एच डेविश ने कहा है कि, "पर्यावरण का अभिप्राय भूमि या मानव को चारों ओर से घेरे उन सभी भौतिक स्वरूप उसे है जिनमें ना केवल वह रहता है बल्कि जिनका प्रभाव उसकी आदतों एवं क्रियाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।"

रास(Ross) लिखते हैं, "पर्यावरण कोई भी वह बाहरी शक्ति है जो हम को प्रभावित करती है।"

पृथ्वी जीवन का आधार है इसके सुरक्षा और सुंदरता को कायम रखना हमारा दायित्व है क्योंकि पृथ्वी द्वारा दिए गए संसाधन जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है परंतु इस आधुनिक काल में मानव अपने पर्यावरण को इतनी क्षति पहुंचाई है जिसके फलस्वरूप प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न हो गया है जिसके फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता को नुकसान पहुंच रहा है अतः यह हमारे लिए चिंता का विषय है।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

हमारा पर्यावरण क्यों बदल रहा है ?

यह प्रश्न हम सभी के मन में जरूर आता है कि, हमारा पर्यावरण आखिर क्यों बदल रहा है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि किसी भी जीवित प्राणी के लिए जो चारों तरफ का वातावरण है जिसमें की वस्तुएं स्थान लोग एवं प्रकृति आते हैं पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण को हम दो घटकों में विभाजित करते हैं पहला है, प्राकृतिक पर्यावरण तथा दूसरा है, मानवीय पर्यावरण पर्यावरण इन दोनों घटकों से हम समझ सकते हैं कि आखिर हमारा पर्यावरण बदल क्यों रहा है।

प्राकृतिक पर्यावरण

जलवायु जीव जंतु भूमि पेड़ पौधे यह सभी प्राकृतिक पर्यावरण बनाते हैं। यह सभी अपने आसपास के पर्यावरण पर निर्भर है और एक दूसरे पर भी आश्रित हैं। प्राकृतिक पर्यावरण के अंतर्गत सभी जीव प्रकृति के अनुरूप होते हैं और उस पर आश्रित होते हैं।

मानवीय पर्यावरण

यदि हम बात करें मानवीय पर्यावरण की तो मानव अपने पर्यावरण के अनुसार पारस्परिक क्रिया करता है और उसमें अपने आवश्यकतानुसार परिवर्तन करता है। प्रारंभ में मानव स्वयं को प्रकृति के अनुरूप बदलता था क्योंकि तब उसकी जरूरत उसके आसपास की प्रकृति से पूरी हो जाया करती थी परंतु समय के साथ-साथ मानव की आवश्यकताएं भी बढ़ती जा रही हैं यही कारण है कि मानव अब प्रकृति को अपनी आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित कर रहा है। आद्योगिक क्रांति, परिवहन, व्यापार, संचार, इन सभी का बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ है। जिसके फलस्वरूप पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुंचा है।

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट और डाउन टू अर्थ (पत्रिका) के वार्षिक प्रकाशन द्वारा भारत की पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट 2023 जारी की गई यह रिपोर्ट प्रवासन, जलवायु, स्वास्थ्य, खाद्य प्रणालियों पर केंद्रित है । जिसके अंतर्गत वन और वन्यजीव, ऊर्जा, जैवविविधता, आवास, उद्योग, अपशिष्ट, प्रदूषण, कृषि एवं ग्रामीण विकास शामिल है।

रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत प्रतिदिन 150 हजार टन नगरपालिका ठोस अपशिष्ट उत्पन्न कर रहा है, जिसमें से आधे से ज्यादा को या तो लैंडफिल में फेंक दिया जाता है या फिर अनुपयुक्त पड़ा रहता है। देश में 30,000 से अधिक जल निकायों का अतिक्रमण किया गया है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत ने वायु प्रदूषण के कारण जीवन की औसत अवधि 4 वर्ष 11 माह कम हो जाती है। लगातार वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है तथा पर्यावरणीय अपराध लगातार बढ़ रहे हैं, अदालतों को लंबित मामलों को निपटाने के लिए प्रतिदिन 245 मामलों का निर्णय लेने की जरूरत है जो कि एक बड़ा ही मुश्किल काम प्रतीत होता है।

यदि बात करें चरम मौसम घटनाओं की तो जनवरी से अक्टूबर 2022 के बीच भारत 271 दिनों तक इस चरम मौसम घटनाओं में फसा देखा गया इन घटनाओं ने 29 सौ से अधिक लोगों की जान ले ली वर्ष 2021 भारत में प्राकृतिक आपदाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित चौथा देश था और उसी वर्ष 29 लाख लोगों का आंतरिक विस्थापन देखा गया। पिछले 5 वर्षों में सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने में भारत की समग्र वैश्वीक रैंक नौ स्थानों की गिरावट के साथ 2022 में 121 वी रैंक

@2025 Bihar Shodh Samaagam

पर आ गई है। भारत 4 दक्षिण एशियाई देशों जैसे- बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, और नेपाल से नीचे है।

संरक्षण की आवश्यकता क्यों ?

संसाधन के संरक्षण की आवश्यकता क्यों है और कितनी है यह समझना अत्यंत जरूरी है।

डॉ. मैकनाल ने संसाधन संरक्षण को परिभाषित करते हुए कहा है कि, "अच्छे संरक्षण का आशय किसी संसाधन का ऐसा उपयोग है जिसमें मानव जाति के विशेषताओं की पूर्ति सर्वोत्तम ढंग से हो सके।"

प्रकृति ने हमें उपहार के तौर पर कई विभिन्न संसाधन प्रदान किए हैं इसलिए प्रकृति का सम्मान रखते हुए उन संसाधनों का संरक्षण करना हमारा प्रथम उद्देश्य होना चाहिए। हम इन्हीं संसाधनों के द्वारा ही जीवित है अतः हमारा कर्तव्य है कि हम इस की महत्वता को वक्त रहते समझ सके और समझा सके। हमारा यह समझना आवश्यक है कि हमारे कुछ प्राकृतिक संसाधन ऐसे हैं जो सीमित है इसलिए वर्तमान पीढ़ी का यह कर्तव्य है कि वह भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन संसाधनों को संरक्षित रखें। संसाधनों का उपयोग किस प्रकार से करें जिससे उनके पुनः उत्पन्न होने की संभावना बनी रहे। जो संसाधन सीमित हैं उनके स्थान पर किसी अन्य उपयोग किए जा सकने वाले साधन की खोज किया जाना चाहिए ताकि उन सीमित संसाधनों को संरक्षित किया जा सके। संसाधनों की व्यर्थता को रोकना चाहिए साथ ही संसाधनों को प्रदूषित होने से भी बचाना चाहिए। संसाधनों के संरक्षण से पर्यावरण को हम संतुलित बना सकते हैं जिसके फलस्वरूप हम स्वयं भी स्वस्थ और सुरक्षित रह सकते हैं क्योंकि हम सभी पर्यावरण पर निर्भर हैं।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

इसके अंतर्गत जल संसाधन, वन संसाधन, भूमि संसाधन, मृदा संसाधन, आदि आते हैं। जिनके संरक्षण के बारे में हम संक्षिप्त रूप से समझने का प्रयास करेंगे।

जल संसाधनों का संरक्षण

जल संसाधन प्रकृति द्वारा दिया गया मूल्यवान संसाधन है। इसका उपयोग पृथ्वी पर रह रहे जीवधारी और जीवजंतु करते हैं तथा वायुमंडल में भी उपस्थित सभी जीव के लिए यह आवश्यक संसाधन है। विचार करने वाली बात यह है कि, पृथ्वी की सतह पर तीन चौथाई भाग जल से ढका है यानी पृथ्वी पर थल की अपेक्षा जल की अधिकता है। तो फिर ऐसा क्यों है कि कई देशों को जल की कमी का सामना करना पड़ रहा है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि जल का उपयोग सही प्रकार से नहीं हो रहा है। जिसकी वजह से कई देशों में जल संकट उत्पन्न हो रहा है चूकि महासागरों का जल लवणीय है इसलिए मनुष्य उस जल का उपयोग नहीं कर सकता। अलवण जल केवल 2.7% ही है। इसका लगभग 70% भाग बर्फ की चादरों और हिमानियों के रूप में उपलब्ध है परंतु मनुष्य एक प्रतिशत अलवण जल ही उपयोग कर पाता है और उस जल को भी वह धीरे-धीरे प्रदूषित करता जा रहा है।

इन्हीं कारणों की वजह से ही जल की अधिकता के बावजूद भी पीने योग्य पानी की कमी है इसीलिए जल बहुत मूल्यवान संसाधन है और इसका संरक्षण आवश्यक है। कुछ बातों का ध्यान रख जल का संरक्षण किया जा सकता है जैसे- जल का सही तरीके से उपयोग के लिए यह आवश्यक है कि अनावश्यक जल के दुरुपयोग को रोका जाए। वर्षा जल का संग्रहण नदियों झीलों और तालाबों में किया जाए। सिंचाई के लिए खेतों तक पक्की नालियों नहरे बनाई जाए। फैक्ट्रियों से

निकलने वाला प्रदूषित जल को फिल्टर करके पुनः फैक्ट्रियों द्वारा उपयोग किया जाए। शहरों से निकलने वाला गंदा पानी को सही प्रकार से सीवर लाइन से जोड़ा जाए और आबादी वाले क्षेत्र से दूर किसी गड्ढे में फिल्टर किया जाए तथा उसमें क्लोरीन मिलाकर उस जल को पुनः नदियों में छोड़ा जाए।

वन और अन्य वनस्पति आवरण धरातलीय प्रवाह को कम करती है और भूमिगत जल को पुनः पूरित करती हैं। जल संरक्षण पृष्ठीय प्रवाह को बचाने की दूसरी विधि है। जल रिसाव को कम करने के लिए खेतों को सिंचित करने वाली नहरों को ठीक से पक्का करना चाहिए। रिसाव और वाष्पीकरण से होने वाले जल क्षति को रोकने के लिए क्षेत्र की स्प्रिंकलर सिंचाई करना अधिक प्रभावी विधि है। वाष्पीकरण को अधिक दर वाले शुष्क प्रदेशों से सिंचाई की ड्रिप अथवा टपकन विधि बहुत उपयोगी होती है। सिंचाई की इन विधियों को अपनाकर बहुमूल्य जल संसाधन को संरक्षित किया जा सकता है।

भूमि संरक्षण

प्राकृतिक संसाधन में भूमि भी महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक है। पृथ्वी का 30% भाग भूमि है परंतु इस 30 प्रतिशत में भी सभी भाग उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं है। भूमि का उपयोग विभिन्न कार्यों के लिए किया जाता है जैसे- कृषि, वानिकी, खनन, सड़क, उद्योग, आदि। चूंकि जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है परंतु भूमि की उपलब्धता सीमित है अतः या कहा जा सकता है कि अधिक जनसंख्या भी चिंता का विषय है। वर्तमान में निर्माण से संबंधित जो भी गतिविधियां और कृषि संबंधित विस्तार के कारण मृदा अपरदन, भूस्खलन, निम्नीकरण पर्यावरण के लिए खतरा है। बढ़ती जनसंख्या और मांग के कारण भूमि का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ है इसलिए बढ़ती जनसंख्या को रोकना, साथ ही साथ रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग पर रोक लगाकर तथा पेड़ लगाकर भूमि का संरक्षण किया जा सकता है।

मृदा संरक्षण

भूमि की ऊपरी परत मृदा कहलाती है। मृदा पौधों को आधार प्रदान करती है या यूं कहें कि, पौधों का अस्तित्व ही मृदा पर निर्भर है। हम मनुष्य इन पौधों पर आश्रित है अतः कहा जा सकता है कि मृदा मनुष्य के लिए भी आवश्यक है, इसलिए मृदा प्रदूषण जैसे समस्याओं को गंभीर मानकर मृदा क्षरण को समझना और उसे दूर करना जरूरी है। मृदा क्षरण कीटनाशकों के प्रयोग से होता है जिससे मिट्टी उत्पादन क्षमता घटती है। पशु चरण और वर्षा की तीव्रता भी मृदा क्षरण के प्रमुख कारण हैं। मृदा संरक्षण के लिए कुछ विधियां हैं जैसे- मल्व बनाना, वेदिका फार्म, समोच्चरेखीय जुताई, रक्षक मेखलाएं, समोच्चरेखीय रोधिकाएं चट्टान बांध तथा बीच की फसल उगाना आदि। इन का उपयोग करके मृदा का संरक्षण किया जा सकता है।

वन संरक्षण

वन्यजीवों और पेड़-पौधों का अत्याधिक महत्व माना जाता है। वन संरक्षण केवल जीवों के संरक्षण के लिए ही नही बल्कि पूरे पारिस्थितिकी संरचना में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।वनों के कारण ही ऑक्सीजन उत्पादित होती हैं और वातावरण में ऑक्सीजन की महत्वपूर्ण आपूर्ति बनी रहती हैं। साथ ही साथ ये वन पृथ्वी के संतुलन को बनाए रखने में मदद करते हैं।

जैसा की हम सभी जानते है की हमारे आस-पास के वनों की अन्धाधुन कटाई हो रही है। जिसके कारण पारिस्थितिकी

@2025 Bihar Shodh Samaagam

तंत्र कमजोर होता जा रहा है। इसलिए ये समझना और समझाना महत्वपूर्ण हो जाता है की वनो का संरक्षण इतना आवश्यक क्यों है?

कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों ने इसके संरक्षण क लिए मिलकर काम करना शुरू किया है। जिसके अंतर्गत वन्यजीवों की निगरानी रखना , वनों की सुरक्षा , और अवैध कटाई के खिलाफ सक्त कदम उठाए जा रहे है। कुछ छोटे छोटे योगदान देकर हम वनों एवं वन्यजीवों की देखभाल कर सकते है जैसे- हम पेड़ लगाकर ,जानवरों को भोजन देकर, लकड़ियों का प्रयोग न करके आदि। इन छोटे छोटे प्रयासों से हम पर्यावरण का निर्माण सुरक्षित रूप में कर सकते है। इससे वन्यजीवों की संख्या में वृद्धि हो सकती है और उनके संरक्षण के लिए आवश्यक पर्यावरण सुनिश्चित हो सकता है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम वनों की रक्षा करें, अवैध कटाई से इन्हें बचाएं, और वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए छोटे छोटे उपाय अपनाएं।ताकि हम स्वयं को और आने वाली पीढ़ियों को स्वस्थ और संतुलित पर्यावरण में सुरक्षित रख सकें।

जैव विविधता का संरक्षण

जैव विविधता संरक्षण, हमारे प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी संतुलन के लिए महत्वपूर्ण है। यह केवल वन्यजीवों की संरक्षण की बात नहीं है करती , बल्कि यह सभी जीवों की संरक्षण का एक प्रत्यक्ष प्रमान रखती है- चाहे वे पौधे हों, पशु हों, पक्षि हों या मानव जाति के सदस्य हों। विविधता जीवों के जीवन के हर पहलुओं को बात करती है , जिसकी वजह से हम जीवों के जीवनचक्र और प्राकृतिक संबंधों को अच्छे से समझ पाते हैं।

जैव विविधता का संरक्षण करने के लिए, वन्यजीव संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है , जो अवैध वनस्पति और पशु व्यापार हों रहे है उनको रोकने के उपाय ढूंढने चाहिए, और वन्यजीवों के निवास स्थलों की सुरक्षा करने के उपाय अपनाने चाहिए। जैव विविधता संरक्षण में जागरूकता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। स्थानीय लोगो को प्राकृतिक संसाधनों के महत्व की जागरूकता देनी चाहिए ताकि वे उनकी सुरक्षा और संरक्षण में सहयोग कर सकें। इसके साथ ही, जैव विविधता संरक्षण के लिए सरकारों और संगठनों को सशक्त कानूनों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, और विभिन्न स्तरों पर सही प्रबंधन योजनाएँ बनाने चाहिए।

अतः,जैव विविधता संरक्षण हम नागरिकों की जिम्मेदारी है और इसे सुरक्षित रखने के लिए प्रयास करना आवश्यक है क्यूकि यह सिर्फ हमारे वर्तमान पीढ़ियों के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक बेहद मूल्यवान उपहार है।

पर्यावरण की शिक्षा और जागरूकता

पर्यावरण की शिक्षा और जागरूकता की महत्वता से हम भली भाँती अवगत है। हमारी प्रकृति ने हमें अनगिनत संसाधन प्रदान किये हैं जिन्हें हमें सही तरीके से उपयोग करने की आवश्यकता है ताकि आने वाले पीढ़ियाँ भी उनका उपयोग कर सके। पर्यावरण की शिक्षा प्रकृति के महत्व को समझती है बतलाती है। पृथ्वी के प्रतेक प्राणी के जीवन का प्रतेक पहलु प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है, अब भले वह खाद्य, पानी, वायु या ऊर्जा हो। पर्यावरण की शिक्षा से ये सीख मिलती है कि प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करना क्यूकि कुछ संसाधन सिमित है और उनका अन्धाधुन उपयोग घातक साबित हों सकता है इसलिए यह महत्वपूर्ण है की यदि विकास हम चाहते है तो हमें प्रकृति के प्रति प्राकृतिक- मानवीय संतुलन को बनाये रखने की आवश्यकता है

पर्यावरण की जागरूकता आवश्यक है क्यूकि हमारी क्रियाएँ ही पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। प्रदूषण, वनस्पति और पशुओं के प्रति दुर्व्यवहार आदि के कारण पर्यावरण को नुकसान पहुचता है अतः इसकी जागरूकता सभी को होनी आवश्यक है।बच्चों को स्कूल स्तर से पर्यावरण के महत्व के बारे में शिक्षा देना महत्वपूर्ण और एक अच्छी पहेल है। यह उनकी सोचने की क्षमता को विकसित करेगी और वे एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में पर्यावरण संरक्षण में भाग लेने के लिए प्रेरित होंगे।

सरकारों और संगठनों भी पर्यावरण की शिक्षा को समर्थन कर रही है। उन्हें जनसमृद्धि के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का भी ध्यान रखना उनका कर्तव्य है।

पर्यावरण की शिक्षा और जागरूकता का समाज के साथ-साथ पूरी मानवता के लिए महत्वपूर्ण है। हम इसे अपने दैनिक जीवन में अपनाकर प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभा सकते है

पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम

- राष्ट्रीय नदी संरक्षण कार्यक्रम
- ग्रीन इंडिया मिशन
- राष्ट्रीय वन रोपण कार्यक्रम
- नेशनल मिशन ऑन सस्टेनिंग हिमालय इकोसिस्टम
- पर्यावरण संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाए गए कदम
- ओजोन परत के नष्ट करने वाले पदार्थों पर वियना कन्वेंशन के लिए मांन्ट्रियल प्रोटोकॉल 1987
- खतरनाक अपशिष्ट ओके सीमा पर संचालन पर बेसल कन्वेंशन 1989
- रॉटरडैम कन्वेंशन 1998
- स्थाई कार्बनिक प्रदूषकों पर स्टॉकहोम कन्वेंशन
- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन 1992
- जय विविधता पर कन्वेंशन 1992
- संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय

निष्कर्ष:-

प्राकृतिक संरक्षण एक ऐसी महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसका मुख्य उद्देश्य पृथ्वी और पर्यावरण जीवों की रक्षा करना है, ताकि हम सभी का भविष्य सुरक्षित रह सके। हमारे प्राकृतिक संसाधनों में वृक्ष, जल, जलवायु, जीवों और जीवाश्म प्रमुख होते हैं, और ये सब हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं।

वर्तमान समय में वनस्पतियों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, और प्रदूषण की समस्याएँ बढ़ रही हैं, जिससे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण को मजबूत करने की आवश्यकता है। हमारे वनों की कटाई से जीवों के निवासस्थल कम हो रहे हैं, जलवायु परिवर्तन के कारण आवश्यक जल संसाधनों की कमी हो रही है और प्रदूषण के कारण वायुमंडलीय प्रदूषण बढ़

रहा है, जिससे स्वास्थ्य और पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

प्राकृतिक संरक्षण के महत्व को समझते हुए, हमें उन सभी कार्य को अपने दैनिक जीवन में शामिल करना चाहिए जो हमारे प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने में मदद कर सकते हैं। वृक्षारोपण, जल संवर्धन, और जलवायु संरक्षण के उपायों को अपनाकर हम संवेदनशीलता और जागरूकता फैला सकते हैं।

भविष्य की सुरक्षा के लिए प्राकृतिक संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है।वर्तमान पीढ़ियों के लिए ही नही बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी हमें स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाना होगा। प्राकृतिक संसाधनों की महत्वता को समझकर उनकी सुरक्षा करने में अपनी भूमिका को समझना चाहिए।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

संदर्भ:-

1) डॉ. उषा मिश्रा – पर्यावरण शिक्षा, 2014, अनुभव पब्लिशिंग हाउस

2) बी. बी. पाण्डेय – पर्यावरण शिक्षा, 1999, डॉमिनेंट पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर

3) दामोदर शर्मा & हरिसचंद्र व्यास – पर्यावरण शिक्षा, 2016, प्रभात प्रकाशन

4) डॉ दया शंकर त्रिपाठी-पर्यावरण शिक्षा, 2005, मोतीलाल बनारसी दास , जवाहर नगर दिल्ली

5) डॉ शरदेन्दु किसलय- पर्यावरण शिक्षा, 2006, प्रकाशक डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस (नई दिल्ली)

6) शमशेर अ. खान - पर्यावरण और पक्षी 1995, प्रकाशक विद्या प्रकाशन मन्दिर 1681 दरियागंज नई दिल्ली

7) हरिश्चंद्र व्यास - पर्यावरण, 2004, विद्या विहार, नई दिल्ली

8) डॉ गायत्री प्रसाद- पर्यावरण, 2006, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

9) सरला देवी- संरक्षण विनाश, 1981, ज्ञानोदय प्रकाशन,(हल्द्वानी) नैनीताल

10) एम के गोयल- पर्यावरण शिक्षा,2003, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा